कवि निराला एवं जोश मलीहाबादी की प्रकृति प्रेम एवं सौंदर्यपरक रचनाएँ

डॉ. माहेनूर सैयदा

निराला के काव्य में प्रेम – तत्व

छायावादी कवियों ने प्रकृति को चेतना प्रदान की है तथा उसमें मानव व्यक्तित्व का आरोप किया है। वस्तुतः मानव जीवन प्रकृति से अनेकों अनेक रूप में समबद्ध है। मानव शस्य श्यामला धारित्री की गोद में जन्म लेता है, यहीं उसका चेतना का निर्माण और विकास होता है। बन्ध, निर्झरिणी का समधर संगीत मेघों की मोहक मल्हार, विद्युत का आवेग पूर्ण नर्तन उसको अलौकिक आनंद को आपूर्ति करते हैं। उषाकालीन स्वर्णिम रश्मियाँ, दिवस का प्रज्जवल आतप फर्म में निरत होने का आह्वन करते हैं।

मनुष्य प्रकुति की गोद में जन्म लेकर उसी की गोद में चिर विश्राम लेता है। वह कहीं भी चला जाये धरती, आकाश, पर्वत, समुद्र, वन, उपवन, सरित–निर्झर से अपने को घिरा हुआ पाता है। सूर्य, चन्द्र व नक्षत्र को वह उदित होते और डूबते देखता है। 1.

निराला के काव्य में सत्त मुक्ति और विराटता की खोज रही है। इस खोज से संबंधित कवि का सम्बन्ध मानवीस दृष्टि के अतिरिक्त प्रकृति तथा शेष सृष्टि से अधिक रागात्मक और आत्मीय बन पड़ा है। इन्होंने संकीर्ण सामाजिक वातावरण से ऊबकर प्रकृति के कारण में अभिनव सौदर्य के साथ स्थापना की प्रकृति के संघर्ष और स्नेह दोनों की प्रतिक्रिया इस युग की बहुत बड़ी विशेषता है।

प्रकृति प्रेम को प्रवृत्ति सभी प्राणियों में पाई जाती है। मनुष्य में सर्वाधिक और उससे भी कहीं अधिक कवियों में आधुनिक काल के छायावादी काव्यधारा के प्रायः सभी कवियों में पूर्वा पेक्षा काव्यधाराओं से प्रकुति प्रेम अधिक उन्मुख रहा है। प्रसाद, पंत, निराला और सजीव रूप में प्रायः सभी ओर दिखाई देता है। 'निराला' का यह प्रकृति प्रेम अधिक स्पष्ट, प्रत्यक्ष, यथार्थ और जीवन सत्य के बहुत निकट दिखाई देता है।

पंत की भांति 'निराला' को भी प्रकृति से एक गाढ़ा मोह है, इस मोह की अभिव्यक्ति वे या तो दार्शनिक उदगारों एवं रहस्यवादी चिन्तन–धारा से करते हैं, अथवा एक सहृदय भावुक कवि की भांति प्रकृति का मानवीकरण करके उससे तादाम्य स्थापित करते हैं। विशुद्ध प्रकृति – चित्रण तथा मानवीकरण में 'निराला' ने इतना सामांजस्य स्थापित कर दिया है कि दोनों कें बीच में कोई विभाजक रेखा खींचना कठिन – सा प्रतीत होता है।

निराला ने प्रकृति के रूप को भलीभांति देखा है। निराला को बादलों और बसन्त का कवि भी कहा गया है। प्रकृति – चित्रण निराला ने इतना मनमोहक ढंग से किया है कि वह कहीं से भी अकाल्पनिक नहीं लगता।

निराला के काव्य में प्रेमतत्व –

प्रेम और सौंदर्य का वही संबंध है जो देह और छाया का होता है। प्रेम यदि देह है तो सौंदर्य उसकी छाया।

निराला ने प्रेम को शाश्वत और अनादि माना है तथा संसार में उसके विविध रूपों को स्वीकार भी किया है। उन्होंने यह भी माना है कि सच्चे प्रेम को पाना कठिन है। निराला की प्रेम संबंधी भावाना अत्यन्त व्यापक है जिसमें एक आत्मा और परमात्मा का प्रेम समाविष्ट है।

निराला के प्रेम के व्यापक विचारधारा के अर्न्तगत आत्मा–परमात्मा का प्रेम, नर–नारी का प्रेम, प्रकुति के पदार्थों का एक–दूसरे के प्रति आकर्धण तथा मानव का प्रकृति–प्रेम, विश्व–प्रेम आदि सभी कुछ समहित है।

कल्पनाशील कवि निराला सौंदर्यरूपी मंदिर के अनन्त उपासक थे। अपनी सौंदर्यप्रियता के विषय में निराला ने स्वयं लिखा है। ''चूँकि बचपन से औरों की तरह मैं भी निष्काम था, इसलिए सब प्रकार के सौंदर्य को देखने और उनसे परिचित होने के सिवाय मेरे अंदर दूसरी कोई प्रेरणा कही न उठती थी। क्रमशः ये संस्कार बन गये, वे ही मेरे साहित्य में प्रतिफलित हुए।'' 2.

निराला के काव्य में सौदर्य के विभिन्न रूप मिलते हैं। यथा नारी – रूप सौंदर्य, पुरूष – सौदर्य, प्रकुति – सौदर्य, कलागत – सौदर्य आदि का वर्णन निराला ने अपने काव्य में किया है।

जोश के काव्य में प्रकृति – चित्रण

जोश ने प्रकृति चित्रण के विभिन्न विषयों पर रूमानवी (छायावादी) अंदाज में बहुत सी नज्में कही हैं। रूमानपी अदब में जोश का एक विशेष स्थान है। प्रकृति चित्रण और उसका सौदर्य जोश के यहाँ बेजान नहीं है बल्कि वह तो ज़िंदगी बख़्शने वाला है। जिस तरह प्रकृति भी जोश के सारे वजूद पर असर करती है। यही कारण है कि जाफर अली खां ने लिखा है कि ''जोश फितरत (प्रकुति) के शायर हैं, उनके कलाम में आबशारों (झरनों) का जोश व खरोश व रतर–नुम है। दरिया की खानी, मौजों का तलातुम (मस्ती) है, बादे सहर की नरमी है। इनकी शायरी में वही बेतरतीबी में तरतीब और तनऊ में हम अहंगी है जो फितरत का तरहे इम्तियाज है।'' 3.

छायावादी कवि होने के कारण जोश प्रकृति के भी वरिस्तार (पुजारी) हैं। जोश को प्रारम्भ ही से प्रकृति और उसके सौदर्य से विशेष लगाव है। इन्हें प्रकृति के कण–कण से प्रेम है वह शायरी में प्रकृति का बड़ा ही मनोरम वर्णन करते हैं। जोश प्रकृति के हसीन जज्बों को इस प्रकार अपनी शायारी में प्रस्तुत करते हैं कि उनकी शायरी भी प्रकुति के सौंदर्य का एक भाग बन जाती है।

जोश के काव्य में प्रेम–तत्व

यह एक हकीकत है कि उर्दू और फारसी तथा हर देश की शायरी में प्रेम की भावना से ही आब व रंग पैदा हुआ है। हिन्दुस्तान में उर्दू, फारसी और हिन्दी शायरी जितनी हुई है उसमें भी इश्क मिजाजी और इश्क हकीकी के हर रंग वहर अंदाज के नमूने मौजूद हैं। जब कभी भी उर्दू शायरी में इश्क (प्रेम) के सुरूर और बयान की बात निकाली है तो हम यह सोचने पर मजबूर हो गए कि आखिर क्या कारण है कि खुसरों से लेकर आज तक उर्दू शायरी का अहम तरीन विषय प्रेम ही रहा है। यह कहना ज्यादा ठीक होगा कि उर्दू शायरी की आधार शिला इश्क पर रखी गई है।

जोश के अंदाजे शायरी पर नजर डालते हुए इन्हें शायर फितरत और मुसत्विराते जज्बात कहा गया है। उनकी ख्याल परस्ती और एहसास नवाजी का तजकिरा करके उन्हें रोमानी शायर का लक़ब दिया गया है। जोश के प्रेमपरक काव्य में इनके

स्वभाव को रूमानियत मौजूद है। इश्क व आशिकी के विभिन्न विषयों पर इन्होंने कविताएं लिखा है। प्रेम की अनेक परिस्थितयों का वर्णन जोश ने अपनी बहुत सी जन्मों में किया है।

इसी तरह जोश को प्रकृति के जर्रे–जर्रे से प्रेम व लगााव है। वह प्रकृति के कहसीन जलवों को इस प्रकार पेश करते है जिससे उनकी शायरी प्रकृति–प्रेम का एक हिस्सा बन गई है।

जोश के काव्य में सौंदर्य

हुस्न व इश्क जोश के काव्य के दिलकश विषय है। जोश सौदर्य के शैदाई हैं और सौंदर्य से प्रभावित हुए बिना नही रहते। सौंदर्य कहीं भी हो बिना किसी हिचकिचाहट के उसकी तारीफ करते हैं जोश ने सौंदर्य का वर्णन भावना के साथ किया है। उनकी शायरी में सौंदर्य के वर्णन में कल्पना का कमाल है। वे जात–पात सामाजिक बंधन सब कुछ भूल जाते हैं। जोश सौंदर्य में उदासी को पसंद नहीं करते हैं। वे सौदर्य को देखकर उस पर मोहित हो जाते हैं। इनकी निगाहें हुस्न को तलाशती है।

कमर रईस ने जोश के सौदर्य के बारे में लिखा है कि ''जोश के इस कारनामे पर विस्तार से लिखा जाए तो उन्होंने पहली बार औरत के हुस्न को उसके जिंदा माहौल और विस्तार से शेर का मौज बनाया। फिराक की बेशुमार रूबाईयों की तरह जोश ने भी अपनी नज्मों और रूबाईयों में हिन्दुस्तानी तहजीब के पक्षे–मंजर में इंतेहाई हुस्न के लाजवाब नमूने पेश किए हैं इनमें जोश सौदर्य एहसास की गहराई न सही, शादाबी और रंगीन पूरी तरह झलकती है।

जोश की शायरी में प्रकृति सौंदर्य का भी वर्णन मिलता है। इन्होंने प्रकृति के विभिन्न दृश्यों पर बहुत सी कविताएँ लिखी हैं। प्रकृति की तरफ भी जोश प्राकृतिक सौंदर्य की वजह से ही प्रभावित हुए और उन्होंने इन प्रकृति सौदर्य में ऐसी परिस्थिति को तलाश किया है जो कि इंसान के सौंदर्य और एहसासे जमाल को प्रभावित करता है।

समाकलन

छायावादी कवियों का प्रकृति प्रेम – प्रसिद्ध है। निराला ने प्रकृति के रूप को अनेक प्रकार से देखा है। निराला बादलों और बसंत के कवि कहे गये हैं। इस धरती के सौंदर्य से निराला का मन बहुत दृढ़ता के साथ बंधा हुआ है। प्रकृतिपरक गीतों में निराला ने कई प्रयोग किए हैं। छायावादी कवियों में शायद निराला ही ऐसे करते हैं जिनका प्रकृति चित्रण जीचन से इतने गहरे रूप में जुड़ा है। निराला के काव्य में प्रकृति अपने वैविध्य और अर्थवत्ता के साथ विद्यमान है।

हिंदी कवियों की भांति उर्दु में भी प्रकृति चित्रण हुआ है। जोश ने प्रकृति चित्रण के विभिन्न पहलुओं पर रूमानवी अंदाज में बहुत सी नज्में कहीं है। निराला के समान ही रूमानवी अदब में जोश का एक अहम मुकाम है। निराला के समान जोश ने भी प्रकृति के किसी पहलू को नजरअंदाज नहीं किया है बल्कि उसके कण–कण में दिलकश स्थिति पैदा करने का कमाल किया है।

1. **निराला आत्महन्ता आस्था – डॉ. दूधनाथ सिंह, पृ. –228**
2. **गीतिका – निराला , पृ. 05**
3. **असर के तन्कीद मजामीन – जाफर अली खाँ. पृ. 29**